IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निषाद जाति : एक परिचयात्मक विवरण

डॉ0 राम लखन प्रसाद सिंह
व्याख्याता, समाजशास्त्र विभाग,
एस0 एम0 आर0 सी0 के0 कालेज, समस्तीपुर,
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, (बिहार)

परिचय

बिहार के सामाजिक संरचना में निषाद जाति का विशेष महत्व है। जल संसाधन का समुचित उपयोग निषाद जाति के लोगों के द्वारा ही परम्परागत रूप से होता रहा है।

बिहार में जातिगत संरचना के अन्तर्गत निषाद जाति का अत्यन्त महत्व है। मत्स्य–पालन, मत्स्य व्यापार तथा मत्सत्य उद्योग में निषाद जाति का योगदान प्रकार्यात्मक है। अतः इस अध्ययन के द्वारा निषाद जाति के सम्बन्ध में प्रामाणिक तथ्यों का उपस्थापन किया गया है। निषाद जाति का परिचय साक्षात्कार के रूप में लिया गया है।

वस्तुतः बिहार में जातिगत संरचना के अन्तर्गत निषाद जाति का जाति–संस्तरण, जाति–नियोग्यताएँ, विवाह, व्यवसाय, शिक्षा बेरोजगारी आदि चिन्तनीय है। शोध के क्रम में यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि बिहार में निषाद जाति का जाति–संस्तरण, जाति–नियोग्यताएँ, विवाह, व्यवसाय, शिक्षा बेरोजगारी आदि की क्या स्थिति है? वर्तमान अध्ययन के आधार पर बिहार में निषाद जाति में मौजूद आधार–भूत संरचनाओं का अध्ययन किया गया। वर्तमान अध्ययन के ही आधार बिहार में उपलब्ध आवश्यक आवश्यकताओं का जायजा लिया गया। वर्तमान अध्ययन के आधार पर निषाद जाति के व्यापक सामाजिक विभेदीकरण के तथ्यों पर रोशनी डालने का प्रयास किया गया। वर्तमान अध्ययन के के आधार पर निषाद जाति में शिक्षा, स्वास्थ्य, जलापूर्त्ति एवं मानव अधिकार से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों की स्थिति की जानकारी ली गयी।

प्रस्तुत अध्ययन में परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः वर्तमान शोध परिचयात्मक विवरण पर आधारित है। साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। गवेषक ने साक्षात्कार के क्रम में उत्तरदाताओं का तथ्यों का संकलन किया। अनुसूची के प्रथम भाग में उत्तरदाताओं के परिचयात्मक विवरण से संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया। अतः

साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं की परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत प्राप्त किया गया है। वर्तमान अध्ययन में तालिकाबद्ध आधार पर उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

जाति–संस्तरण तथा शिक्षाः–

वर्तमान शोध निषाद जाति का समाजशास्त्र अध्ययन से संबंधित है। वस्तुतः बिहार में निषाद जाति की जाति–संस्तरण तथा शिक्षा चिन्तनीय है। शोध के क्रम में यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि बिहार में निषाद जाति की जाति–संस्तरण तथा शिक्षा की स्थिति क्या है?

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति–संस्तरण तथा शिक्षा का अध्ययन किया है। वस्तुतः वर्त्तमान शोध जाति संस्तरण तथा शिक्षा पर आधारित है। साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है। गवेषक ने साक्षात्कार के क्रम में उत्तरदाताओं का तथ्यों का संकलन किया। अनुसूची के तृतीय भाग में जाति–संस्तरण तथा शिक्षा का अध्ययन से संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया। अतः साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं की जाति–संस्तरण तथा शिक्षा के स्तर का आकड़ा प्राप्त किया गया है। वर्तमान अध्ययन में तालिकाबद्ध आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1

क्या आपकी जाति में शिक्षा के प्रति लगाव हैं ?

अभिमत	पारिवारिक मासिक आय							कुल योग
	2000 से कम	2001 से 3000	3001 से 4000	4001 से 5000	5001 से 6000	6001 से 7000	7000 से अधिक	
हाँ	38 19 %	36 18 %	32 16 %	28 14 %	16 08 %	14 07%	14 07 %	178 89 %
नहीं	06 03 %	04 02 %	04 02 %	02 01 %	04 02%	02 01%	00 00 %	22 11 %
योग	44 22 %	40 20 %	36 18 %	30 15 %	20 10%	16 08%	14 07 %	200 100 %

तालिक 1 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 89 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा के प्रति लगाव है और 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा के प्रति कोई लगाव नहीं है।

तालिका 2

क्या आपके बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं ?

अभिमत	पारिवारिक मासिक आय							कुल योग
	2000 से कम	2001 से 3000	3001 से 4000	4001 से 5000	5001 से 6000	6001 से 7000	7000 से अधिक	
हाँ	10 05 %	08 04 %	10 05 %	10 05 %	12 06 %	10 05 %	00 00	60 30 %
नहीं	34 17 %	32 16 %	26 13 %	20 10 %	08 04	06 03 %	14 07 %	140 70 %
योग	44 22 %	40 20 %	36 18 %	30 15 %	20 10 %	16 08 %	14 07 %	200 100 %

तालिक 2 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ही अपने बच्चे में पढ़ाते हैं बांकी 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं अपने बच्चों को नहीं पढ़ा पाते हैं।

तालिका 3

क्या आप अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए उचित व्यवस्था करना चाहेगें ?

अभिमत	पारिवारिक मासिक आय							कुल योग
	2000 से कम	2001 से 3000	3001 से 4000	4001 से 5000	5001 से 6000	6001 से 7000	7000 से अधिक	
हाँ	34 17 %	40 20 %	36 8 %	24 12 %	16 08 %	16 08 %	14 07 %	180 90 %
नहीं	34 17 %	00 00 %	00 00 %	06 03 %	04 02 %	00 00	00 00	20 10
योग	44 22 %	40 20 %	36 18 %	30 15 %	20 10 %	16 08 %	14 07 %	200 100 %

तालिक 3 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं बच्चों को पढ़ाने के लिए उचित व्यवस्था चाहता है और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं बच्चों को पढ़ने का उचित व्यवस्था नहीं चाहता है।

तालिका 4

क्या आपके जाति में पढ़े–लिखे लोगों के प्रति सम्मान का भाव है ?

अभिमत	पारिवारिक मासिक आय							कुल योग
	2000 से कम	2001 से 3000	3001 से 4000	4001 से 5000	5001 से 6000	6001 से 7000	7000 से अधिक	
हाँ	32 16 %	34 17 %	30 15 %	24 12 %	18 09 %	14 07 %	14 07 %	166 83 %
नहीं	12 16 %	06 03 %	06 03 %	06 03 %	02 01 %	02 01 %	00 00 %	34 17 %
योग	44 22 %	40 20 %	36 18 %	30 15 %	20 10 %	16 08 %	14 07 %	200 100 %

तालिक 4 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 83 प्रतिशत उत्तरदाताओं में पढ़े–लिखे लोगों के प्रति सम्मान का भाव है और 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं में सम्मान का भाव नहीं है।

तालिका 5

क्या आपके जाति के शिक्षित व्यक्ति गरीबों के विकास के लिए सहयोग करते हैं ?

अभिमत	पारिवारिक मासिक आय							कुल योग
	2000 से कम	2001 से 3000	3001 से 4000	4001 से 5000	5001 से 6000	6001 से 7000	7000 से अधिक	
हाँ	14 07 %	16 08 %	20 10 %	10 05 %	10 05 %	06 03 %	04 02 %	80 40 %
नहीं	30 15 %	24 12 %	16 08 %	20 10 %	20 05 %	10 05 %	10 05 %	120 60 %
योग	44 22 %	40 20 %	36 18 %	30 15 %	20 10 %	16 08 %	14 07 %	200 100 %

तालिक 5 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार शिक्षित व्यक्ति गरीबों के विकास के लिए सहयोग करते हैं और 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार शिक्षित व्यक्ति अपने आप से ही मतलब रखते हैं।

तालिका 6

क्या पढ़ने–लिखने से लोगों की सामाजिक प्रतिष्ठता बढ़ती है ?

अभिमत	पारिवारिक मासिक आय							कुल योग
	2000 से कम	2001 से 3000	3001 से 4000	4001 से 5000	5001 से 6000	6001 से 7000	7000 से अधिक	
हाँ	34 17 %	30 15 %	28 14%	20 10 %	14 07 %	12 06 %	12 06 %	150 75 %
नहीं	10 05 %	10 05 %	08 04 %	10 05 %	06 03 %	02 01 %	02 01 %	50 25 %
योग	44 22 %	40 20 %	36 18 %	30 15 %	20 10 %	16 08 %	14 07 %	200 100 %

तालिका 6 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पढ़े–लिखे लोगों को समाज में प्रतिष्ठा मिलती है और 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं समाज में पढ़े–लिखे लोगों की इज्जत नहीं करते हैं।

सारांशः–

1. तालिका 1 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 89 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा के प्रति लगाव है और 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा के प्रति कोई लगाव नहीं है।
2. तालिका 2 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ही अपने बच्चे में पढ़ाते हैं बांकी 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं अपने बच्चों को नहीं पढ़ा पाते हैं।
3. तालिका 3 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं बच्चों को पढ़ाने के लिए उचित व्यवस्था चाहता है और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं बच्चों को पढ़ने का उचित व्यवस्था नहीं चाहता है।
4. तालिका 4 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 83 प्रतिशत उत्तरदाताओं में पढ़े–लिखे लोगों के प्रति सम्मान का भाव है और 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं में सम्मान का भाव नहीं है।
5. तालिका 5 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार शिक्षित व्यक्ति गरीबों के विकास के लिए सहयोग करते हैं और 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार शिक्षित व्यक्ति अपने आप से ही मतलब रखते हैं।
6. तालिका 6 के आधार पर स्पष्ट होता है कि 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पढ़े–लिखे लोगों को समाज में प्रतिष्ठा मिलती है और 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं समाज में पढ़े–लिखे लोगों की इज्जत नहीं करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थों की सूचीः–

Paplan, Arbaraham, 1964 : The Conduct of Inquiry, Chandler Publishing Company, Chandler Publishing company, USA.

Levi-Strauses, Claude, 1979 : Structural Anelysis in Linguistics and in Anthropology. Occurring Theory In Anthropology, Rebert A. Manners David Daplan (Ed.), Routledge & Kegenpaul, London.

Lewis, Oscar, 1966 : Peasant Culture in India & Mxico, in Villaged India, Mckim Marriott (ed) Chicogo University Press, Chicago.

Lewis, Oscar, 1958 : Village life in Northern India, University of Illinois Press, Urbana.

Marriott, Mackim, 1955 : Village India (Ed) American Anthropological Association.

Marriott, Mackim, 1955 : A Social Structure and change in a U.P. Village : in India's Village, S.K. Dey (ed), W. Bengal Govt., Cal.

Mead, M., 1954 : Cultural Pattern & Technical Change, UNESCO.

Mazumdar, D.N., 1960 : Social contours of an Industrial City Asia Publishing House, Bombay.

Merton, R.K., 1668 : Social Theory and Social Structure The Free Press, New York.

Mishra, B.R., 1959 : Report on Socise Economic Survey of Jamshedpur City, Department of Applied Economics and commerce, Patna University, Patna.

Mukherji, D.P., 1963 : Mahatma Gandhi's View on Machine & Technology, occurring in social Change and Economic Development Jean Maynaud (Ed) UNESCO.

Prasad, N., 1961 : Land and People Tribal Biher, Bihar Tribal Research Institute, Ranchi.

Rao, V.K.R.V., 1965 : Some Problems Confronting Traditional Societies in the Process of Development occurring in Traditional and Modernity In India. A.B. Shah and C.R.M. Pao (Ed) Indian Committee of Cultural Freedom, New Delhi.

Rao, V.K.R.V. & P.B. Desai, 1965 : Greater Delhi – A Study in Urbanization 1940 – 57 Arsis Publishing house, Bombay.

Chauhan, B. R. : 'Scheduled Castes and Scheduled Tribes', Economic and Political Weekly, January, 1969.

Galanter, M. : 'Temple Entry and the Untouchability (Offences) Act, 1955, Journal of Indian Law Institute, 1964,7.